Skill Development Programme

For Answer Writing

World History (Model Answer)

DATE : 05-July-2018 **TIME : 06:30 pm**

मुख्य परीक्षा

प्र. विश्व इतिहास में प्रबोधन काल बौद्धिक क्रांति के द्वितीय चरण को परिलक्षित करता है, जिसने पश्चिमी विश्व का निर्माण आधुनिकतावाद की तर्ज पर किया। इस कथन के संदर्भ में प्रबोधन के राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक दर्शन को स्पष्ट कीजिए। **(250 शब्द, 15 अंक)**

Age of Enlightenment in World History reflects the second stage of intellectual revolution, Which conceptualised the western world on the basis of modernisation. In the reference of this statement, explain the political, social and economical philosophy of Enlightenment.
(250 Words, 15 Marks)

MODEL ANSWER

उत्तर- पुनर्जागरण यदि आधुनिक यूरोप के वैचारिक विकास का प्रथम पड़ाव था, तो प्रबोधन दूसरा पड़ाव। वैज्ञानिक अविष्कारों और अनुसंधानों के कारण न केवल विज्ञान के क्षेत्र में बल्कि धर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि अनेक मानवीय क्षेत्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उदय हुआ। इस वैज्ञानिक दृष्टिकोण के आधार पर विकसित दार्शनिक या वैचारिक क्रांति को 'प्रबोधन या ज्ञानोदय' कहते हैं।

17वीं, 18वीं शताब्दी इस बौद्धिक क्रांति का युग माना जाता है। यूरोप का निर्माण जिस आधुनिकतावाद की तर्ज पर हुआ वह प्रबोधन द्वारा प्रतिपादित विचारधारा का ही प्रतिफल था, जिसका आधार तर्कवाद एवं वैज्ञानिक पद्धति अर्थात् आधुनिकतावाद का यह मानना था कि तर्क एवं वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से मानव सभ्यता को पूर्णता मिलेगी, वहीं प्रबोधन ने विज्ञान व तकनीकी के विकास तथा औद्योगीकरण को भी प्रोत्साहन दिया। अतः इसे आधुनिकता के वाहक के रूप में देखा जा सकता है। इसी आधुनिकतावादी विचारधारा ने राजनैतिक, सामाजिक व आर्थिक दर्शन पर भी प्रभाव डाला।

राजनैतिक-

यह निरंकुश राजतंत्र का विरोध करता है तथा बदले में सीमित राजतंत्र पर बल देता है। अगर मनुष्य स्वभाव से विवेकशील है तो मौका मिलने पर वह निश्चित रूप से अपने लिए एक सक्षम और परोपकारी राजनीतिक संस्था का निमार्ण कर सकता है। भ्रष्ट निरंकुश तंत्र अब असहाय हो गए थे तथा राजनीतिशास्त्र के क्षेत्र में अनेक प्रबुद्ध चिंतकों का प्रभाव पड़ा था, जिसमें से जॉन-लॉक ने सीमित राजतंत्र की अवधारणा दी तथा फ्रांसीसी चितंक वाल्टेयर ने राजतंत्र की निरंकुश प्रवृत्ति पर कुठाराघात किया।

समाजिक-

सामाजिक क्षेत्र में प्रबोधन का बल व्यक्ति स्वतंत्रता अथवा व्यक्तिवाद पर रहा। एक फ्रांसीसी चिंतक मांटेस्क्यू ने अपनी पुस्तक 'स्पिरिट ऑफ लॉज' नामक पुस्तक में शक्ति के पृथक्करण की अवधारणा रखी और इस बात पर बल दिया कि व्यक्ति की स्वतंत्रता को सूचित करने के लिए कार्यपालिका, विधानमंडल और न्यायपालिका इन तीनों को एक-दूसरे से अलग होना चाहिए।

आर्थिक विचारधारा-

प्रबोधन की आर्थिक विचारधारा वाणिज्यवाद की रीति के विपरीत थी। इसका बल मुक्त अर्थव्यवस्था की नीति पर था। एक ब्रिटिश आर्थिक चिंतक एडम स्मिथ प्रबोधन की उपज था उसने वाणिज्यवादी आर्थिक नीति पर करारी चोट की। एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'वेल्थ ऑफ नेशन्स' में मुक्त व्यापार की अवधारणा रखी। इसका मानना था कि प्रकृति के नियमों की तरह बाजार के नियम भी शाश्वत हैं और वे हैं माँग व पूर्ति के नियम। इसलिए बाजार के नियमों में बाह्य हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए।

* * *